आत्माभिमुख राष्ट्र कल्प

में

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

– दत्तोपंत ठेंगडी

पटना संघ शिक्षा वर्ग समापन समारोह
के अवसर पर भाषण

गत २५ दिनों से चलते आये अपने संघ शिक्षा वर्ग का समापन समारोह आज है और साथ-ही-साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिस उत्सव को प्रतिवर्ष मनाता है, वह हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव भी आज ही है। दोनों का यह संयोग आज के समारोह में हो रहा है। इस तरह से 'दुग्धशर्करा' योग है, ऐसा कहा जा सकता है।

वैसे हम जानते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वे ही उत्सव मनाता है जो हिन्दू राष्ट्र के, हिन्दू समाज के परम्परागत उत्सव हैं। उनमें हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव भी है। समस्त हिन्दू समाज का संगठन करनेवाला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उसका शिक्षा वर्ग, उस वर्ग का समापन और वह भी हिन्दू साम्राज्य दिन के अवसर पर हो, यह एक मधुर संयोग की बात है। अतः आज के इस अवसर पर हम दोनों को समझने का प्रयास करें तो बहुत उपयुक्त रहेगा।

प्रेरणा पुरुष छत्रपति शिवाजी

तीन सौ साल पूर्व की घटना है। चारों ओर हिन्दुस्थान में पराये आक्रमकों का राज्य, साम्राज्य, धर्म पर आक्रमण, हिन्दुओं में आत्मविश्वास का अभाव, पराये आक्रमकों को हम परास्त कर नहीं सकते इस तरह का एक मन का भाव, इस परिस्थिति में एक लड़का मन में निश्चय करता है कि मैं पराये आक्रमण का मुकाबला करूँगा, उनको पीछे हटाऊँगा, अपने स्वराज्य की स्थापना करूँगा, धर्म-राज्य की स्थापना करूँगा। जहाँ दूसरी ओर विरोध में बड़े राज्य-साम्राज्य खड़े थे, बड़ी-बड़ी सेनाएँ और सेनापति थे, राज्यकार्य-धुरंधर ऐसे महान् लोग थे, बड़े कोष थे, और उस लड़के के पास कुछ नहीं, केवल पाँच-पचास अपने समवयस्क लड़कों की लगन थी। इतनी ही साधन-संपत्ति इसके पास, किन्तु निश्चय के आधार पर इस अवस्था में भी उसने 'रावण रथी विरथ रघुराई' की नाई साधन सम्पन्न राज्यों का, साम्राज्यों का मुकाबला करते हुए, उनको परास्त करते हुए, धर्मराज्य की स्थापना की, जिसकी घोषणा ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी माने आज की तिथि पर

हुई, उसको कहा गया 'हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव'। इस घटना को समझना आज की स्थिति में भी आवश्यक है। और वे ही सिद्धान्त, वे ही आदर्श, वे ही स्वप्न, वे ही लक्ष्य सामने रखकर काम करनेवाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझाना भी आवश्यक है।

हिन्दू साम्राज्य का अर्थ

किन्तु दोनों बातों में लोगों को काफी कठिनाई हो रही है ऐसा दीखता है। हमारी हालत यह है कि जितना-जितना आदमी अध्ययन ज्यादा करता है उतना-उतना पराये लोगों के बारे में, पराये सिद्धान्तों के बारे में तो जानकारी ज्यादा रखता है किन्तु अपने बारे में जानकारी धीरे-धीरे कम होने लगती है। अपने आदर्श, अपने सिद्धान्त, अपनी व्यवस्था आदि के विषय में वह जानकारी रखने की इच्छा नहीं रखता, और इसके कारण जो अपनी बात हो, अपनी कल्पना हो, अपनी रचना हो उसको समझना हमारे भाइयों के लिये बड़ा कठिन हो जाता है। यह शिक्षापद्धति का परिणाम है और प्रचार का भी कि हम अपनी बात समझ नहीं पाते। उदाहरण के लिये बतायें। जहाँ हिन्दू-साम्राज्य का नाम लिया तो लोगों के दिमाग में वह कल्पना नहीं आवेगी जो कल्पना हिन्दू साम्राज्य स्थापित करनेवाले छत्रपति शिवाजी के मन में थी, क्योंकि उन्हें हिन्दू शब्द में निहित कल्पनाओं से परिचय नहीं, हिन्दू होते हुए भी। उन्हें पाश्चिमात्य कल्पनाओं का परिचय है। अध्ययन पाश्चिमात्य है, हिन्दू नहीं। इसलिये वे समझ नहीं सकेंगे कि क्या कल्पना शिवाजी के मन में थी। और शब्द का अर्थ लगायेंगे, translation करेंगे, कहेंगे साम्राज्य माने Empire है, यह साम्राज्यवाद है, Emperialism है। इतने गलत अर्थ, गलत भाषान्तर, गलत समकक्ष शब्द equivalent, केवल उधर की एक कल्पना इधर की एक कल्पना-थोड़ा सा ऊपर से सादृश दीखा, कहा कि यही बात है। हिन्दुओं की प्राचीन संस्कृति, प्राचीन परम्परा, प्राचीन इतिहास है। आज के अति प्रगत राष्ट्र जिस समय वन्य अवस्था में थे उस समय सुसभ्य और दुनिया का नेतृत्व करनेवाला राष्ट्र हमारा रहा है। इसलिये पश्चिम में जो देखने के लिये नहीं मिल सकतीं इस तरह की अनेक कल्पनाएँ, कई रचनाएँ हमारे यहाँ हैं। उनका स्वतंत्र अध्ययन न करके कुछ

इधर का, कुछ उधर का सादृश्य दिखाते हुए भाषान्तर कर दिया जाता है। और कहा जाता है कि emperialism खराब है, आपने साम्राज्य शब्द का प्रयोग किया, गलत बात है। जैसे अब लोग मानने लगे हैं कि भई ! धर्म माने religion नहीं, religion माने धर्म नहीं। लेकिन अबतक तो वे कहते थे धर्म याने religion है, religion याने धर्म है। कहनेवाले न religion को जानते हैं, न धर्म को। तो यह जो प्राचीन सनातन राष्ट्र है, इस राष्ट्र की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं, और यहाँ के हमारे जो विशेष शब्द हैं उनके लिए कोई अंग्रेजी समकक्ष शब्द हो नहीं सकते, English equivalent उनका हो नहीं सकता, उसका भाषान्तर नहीं हो सकता। उन्हें अपने प्रकृत रूप में जाना जा सकता है। यह बात न समझते हुए पश्चिम में जो-जो चीजें होंगी वही चीज यहाँ दिखाई देनी चाहिये यह आग्रह रखते हुए, दुराग्रह रखते हुए और यहाँ की चीजों पर वही दोषारोपण करना जो दोषारोपण पश्चिम की कल्पनाओं पर होता है यह गोरखधन्धा हमारे कुछ विद्वानों ने चलाया है। किन्तु हिन्दू शब्द को यदि समझना हो तो उसकी परम्परागत अर्थसंपदा, अर्थच्छाया connotation को समझना चाहिये।

जिसका राज्यारोहण आज के दिन हुआ था उस शिवाजी के बारे में क्या हम जानते नहीं ? स्पष्ट रूप से प्रारम्भ में उसने कहा था कि यह व्यक्ति का राज्य नहीं, कुल का राज्य नहीं, जाति का राज्य नहीं, यह धर्म का राज्य है। और राज्य स्थापना का सारा प्रयास उसने सत्ता के मोह से नहीं किया। तो धर्म के संस्थापन का एक जरिया, एक साधन, एक माध्यम इस नाते राज सत्ता-संपादन करने का प्रयास शिवाजी ने किया और इसी कारण हम देखते हैं, कि शिवाजी ने अपने जीवन में तीन बार स्वकष्टार्जित, स्वपराक्रमार्जित सत्ता छोड़ दी थी। जैसे, सब जानते हैं कि अपने गुरु रामदास को उन्होंने गुरु-दक्षिणा के रूप में उनके झोले में अपना स्वकष्टार्जित स्वराज्य समर्पण किया। जिसके मन में केवल राजनैतिक आकांक्षायें हैं। वह ऐसा नहीं कर सकता। जो समझता है कि यह धर्म का राज्य है मेरा नहीं, याने राजसत्ता स्वयं अपने पास होते हुए भी सत्ता की पिपासा नहीं, सत्ता का मोह नहीं, और धर्म-

स्थापना का एक साधन इसी नाते जो सत्ता सम्पादन की ओर देखता है वही आदमी यह कर सकता है। किन्तु यह, जो हिन्दू पृष्ठभूमि है, मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, वायुमंडल की पृष्ठभूमि उसे न जानते हुए यदि अर्थ लगाये गये तो हिन्दू बातों को समझना बहुत मुश्किल है।

हिन्दू : श्रीपाद डांगे के विचार

शिवाजी के ही संदर्भ में मैं उदाहरण के लिए केवल बताता हूँ कि किस तरह हिन्दू कनोटेशन न समझने के कारण गलतफहमियाँ हो सकती हैं, इसके कुछ उदाहरण कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के चेअरमैन कामरेड डांगे ने दिये हैं। उन्होंने कहा है कि हिन्दुओं का हर एक शब्द का कुछ कनोटेशन है। वह कनोटेशन आप नहीं समझ लेंगे तो गड़बड़ होगी, आप ठीक ढंग से नहीं समझ सकोगे। और इसलिए जिन एक-दो कल्पनाओं के बारे में हमारे ऐसे तथाकथित प्रोग्रेसिव लोग (प्रोग्रेसिव का मतलब, जिसको खुद के बारे में जानकारी नहीं, बाँकी दुनिया के बारे में जानकारी है) जो हिन्दू कल्पना के बारे में टीका करते थे। उनका उदाहरण डांगे ने लिया। शिवाजी को उस समय के लोग अवतार कहते थे। अवतार अवश्य भगवान का ही होता है। तो कई हमारे प्रोग्रेसिव लोगों ने इसका मखौल उड़ाना शुरू किया कि यह क्या है, दकियानूसी है, एस्कुरांटिस है, काहेका अवतार है? डांगे ने कहा 'ऐसा कहनेवाले जानते नहीं कि अवतार शब्द का विशेष कनोटेशन हिन्दुओं का है और वह कानोटेशन उन्होंने बताया कि जिस समय समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विकृतियाँ, दोष निर्माण होते हैं, इसके कारण समाज नीचे जाने लगता है उस समय जो महापुरुष सामने आकर उन विकृतियों को, दोषों को दूर करते हुए नई परिस्थिति के अनुकूल समाज की रचना करता है उसे अवतार माना जाता है। बात ठीक भी है। अब इसका मर्म न समझते हुए और अपने को ज्यादा प्रोग्रेसिव, सस्ते प्रगमनशील कहलाने वाले लोग यदि कहते हैं कि अवतार वगैरह क्या है, यह सब पोंगापन्थी है, तो ऐसे लोगों के अभिप्राय को हम कुछ महत्व नहीं देना चाहते, इसलिए कि उनको ज्ञान ही नहीं है, न ज्ञान प्राप्त कर लेने की इच्छा ही है। पूर्वग्रह ग्रस्त लोग हैं। वह समझते हैं कि बाकी लोग बुद्धू हैं। इस तरह की एक सस्ती

और एक लड़कपन की भावना उनके मन में है और इसके कारण ऐसे लोग हमारी हिन्दू कल्पनाओं के बारे में क्या विचार रखते इसका महत्व देना हम उचित नहीं समझते।

दूसरी कल्पना डांगे ने बताई कि हिंदुओं का अर्थ उसका हिन्दू कानोटेशन न समझने के कारण जिस तरह गलतफहमी पाश्चिमात्य विद्वान करते हैं, हमारे लोग भी करते हैं। शिवाजी का एक विशेषण है गो ब्राह्मण प्रतिपालक। इस पर कितनी ही टीका-टिप्पणी हुई, कि साहब गो पशु है, इसका पालन क्या करना है, ब्राह्मण एक जाति है इसका क्या पालन करना है? कुछ लोगों ने इसमें जातिवाद का भी दर्शन कर लिया। जो ज्यादा फैशनेबुल हैं वे ऐसे ही कुछ गड़बड़ सोच सकते हैं। कॉमरेड डांगे ने कहा कि यह गलत बात है। दोनों शब्द प्रतीकात्मक हैं—symbolic हैं। और वे काहे के symbol हिन्दू परम्परा के अनुसार है, यह समझ लेंगे तब उसका अर्थ ख्याल में आ सकता है। और उन्होंने कहा कि गौ यह जो शब्द है यह गौ शब्द केवल गाय के बारे में नहीं है। यह प्रतीकात्मक है—symbolic है। और यह काहे का symbol है? तो उन्होंने कहा है कि उस समय की जो अर्थव्यवस्था थी, देश की agriculture based economy कृषि प्रधान अर्थव्यस्था, इस अर्थ व्यवस्था का प्रतीक symbol इस नाते 'गौ' यह शब्द हिन्दू परम्परा में आता है। और जब शिवाजी ने कहा कि मैं गौ प्रतिपालक हूँ तो उसका मतलब केवल गौ नाम के जानवर का प्रतिपालन यह विशेषार्थ नहीं है। तो उस समय की जो संपूर्ण अर्थव्यवस्था थी, जिसका आधार गौ था, जिसका आधार कृषि था, इस कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था को मैं टूटने नहीं दूँगा, माने देश की अर्थव्यवस्था को मैं मजबूत करूँगा, यह गो प्रतिपालक शब्द का हिन्दू कॉनोटेशन है। यह दूसरी बात उन्होंने बताई। मैं उदाहरण के लिए बता रहा हूँ। और तीसरा जो शब्द था ब्राह्मण के बारे में, उन्होंने कहा कि यह जातिवाचक शब्द नहीं है, यह भी symbolic है, यह भी एक token है, प्रतीक है और उन्होंने बताया कि हिन्दू परंपरा में ब्राह्मण यह शब्द law के अर्थ में आता है। क्योंकि उसके पूर्व शिवाजी के पूर्व जो भी पराये राजे और बादशाह यहाँ हो गये, सुलतान यहाँ हो गये, वे पश्चिम के monarch के

समाने थे, king लोगों के समान थे माने वे ही सर्वेसर्वा थे, dictator थे, तानाशाह थे उनके लिए नियन्त्रण करनेवाला कोई कानून नहीं था, उनकी इच्छा ही उनके देश का कानून बन जायगी, उनके राज्य का कानून बन जायगी ऐसी परिस्थिति थी। इस परिस्थिति से भिन्न परिस्थिति वाला राज्य मैं निर्माण कर रहा हूँ। अब जो शासक हैं उसकी इच्छा ही कानून नहीं होगी बल्कि समाज का जो कानून है उसके अन्तर्गत राजा को चलना होगा। अतः ब्राह्मण प्रतिपालक होना समाज के कानून के नियंत्रण में राजा के होने का प्रतीक है, यह स्पष्टीकरण कामरेड डांगे ने दिया।

अभी उदाहरण के लिए कुछ बातें मैंने बताईं। इससे स्पष्ट होगा कि हमारी परम्परा में विशेष शब्दों का विशेष अर्थ है। कई शब्द प्रतीकात्मक हैं और ये शब्द किसके परिचायक हैं, किस बात के प्रतीक हैं यदि हम नहीं जानते तो फिर चाल भाषा में उसको misunderstand करना, उसके बारे में गलत धारणा कर लेना यह बड़ी सस्ती बात होगी, केवल प्रोग्रेसिव लोगों को ही ऐसा सस्ता बिचार शोभा देता है, सज्जन आदमी को शोभा नहीं देता।

राष्ट्र कल्प : संघ की कार्यपद्धति

यही बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विषय में है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य है राष्ट्रनिर्माण का। यह हम मानते हैं कि यह संपूर्ण हिन्दुस्थान अपनी-अपनी उपासना-पद्धति को कायम रखते हुए आगे बढ़े। उपासना पद्धति एक व्यक्तिगत बात है यह समझकर हर एक की उपासना पद्धति को पूरी स्वतंत्रता देते हुए राष्ट्र अर्थ में 'भारत' हिन्दू' राष्ट्र है और इस राष्ट्र का निर्माण, पुनर्निमाण, यह ध्येय, यह लक्ष्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सामने है। पुनर्निर्माण का मतलब इस तरह का निर्माण, हर क्षेत्र में निर्माण करना है। इस राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र कहा जाय या न कहा जाय इसके विषय में विवाद करनेवाले मिल सकते हैं तो भी इस राष्ट्र का पुनर्निर्माण होना चाहिए इस विषय में मतभेद रखनेवाले, मैं समझता हूँ कोई नहीं। सभी चाहते हैं कि पुनर्निर्माण होना चाहिये। यह हो सकता है कि सब अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करते हों। कुछ कहते हैं सर्वांगीण उन्नति होनी

चाहिए। कुछ कहते हैं कि संपूर्ण परिवर्त्तन होना चाहिये, कुछ कहते हैं, समग्र क्रांति होनी चाहिए, जैसा जिसका स्वभाव-टेम्परामेंट होगा, गम्भीर से लेकर रोमांटिक तक, वैसे अलग-अलग शब्दों का प्रयोग अपने स्वभाव के मुताबिक लोग करते हैं। लेकिन सब के मन में भाव एक है कि आज की परिस्थिति अवांछनीय है, और जीवन के हर एक क्षेत्र में आमूलाग्र, सर्वकष, सर्वांगीण परिवर्त्तन होना चाहिए, यह बात आज सबके मन में है, शब्द प्रयोग जो कुछ भी करें। और इस दृष्टि से विभिन्न प्रयास चल रहे हैं। विभिन्न क्षेत्रों में प्रयास चल रहे हैं। और इस तरह का प्रयास करने वाले जो लोग हैं उनके मन में प्रश्न आता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ क्या कर रहा है? यहाँ जो लोग आते हैं, ज्यादातर युवक आते हैं, एक बड़ी शक्ति है, इसका उनको आनन्द भी होता है। लेकिन साथ-साथ यह भी सोचते हैं इतनी बड़ी शक्ति किसी काम की नहीं, न सामाजिक परिवर्त्तन के लिए, न राजनैतिक परिवर्त्तन के लिए, न आर्थिक परिवर्त्तन के लिए, बस दक्ष-आरम् कर रहे हैं। क्या उपयोग है इसका? ऐसा विचार लोगों के मन में आ रहा है। वे संघ को समझ नहीं रहे हैं कि यह प्रयास क्या है?

संगठन का अर्थ

संघ का प्रयास यह है, हमारी ऐसी धारणा है कि किसी भी समाज की स्वाभाविक अवस्था संगठन की ही अवस्था होनी चाहिए। संगठन से हमारा मतलब है कि समाज के हर एक व्यक्ति के हृदय में समाज के साथ एकात्मता का, समाज समर्पण का संस्कार अंकित करना; हर व्यक्ति को यह प्रतीत हो कि मैं अलग नहीं, पृथक् नहीं, स्वतन्त्र नहीं, सम्पूर्ण समाज शरीर का अवयव मात्र हूँ, सम्पूर्ण समाज के साथ मैं एकात्मक हूँ; समाज के सुख में मेरा सुख, समाज के दुख में मेरा दुख, समाज के सम्मान में मेरा सम्मान, समाज के अपमान में मेरा अपमान इस तरह की एकात्मता, हर एक व्यक्ति की समाज के साथ ही यह संस्कार हर एक व्यक्ति के हृदय पर अंकित करना और उस दृष्टि से हृदय पर संस्कार अंकित करने वाली दिन प्रतिदिन एकत्रीकरण की कार्यपद्धति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनाई। इस तरह समाज के हर एक व्यक्ति के हृदय में परिवर्त्तन करना, संस्कारों में परिवर्त्तन करना, उसके मन

में, हृदय में, आत्मा में परिवर्त्तन करना, आज जो व्यक्तिवादी है—अलग स्वार्थ का विचार करता है, वह अलग स्वार्थ का विचार न करे, सम्पूर्ण समाज का स्वार्थ वही मेरा स्वार्थ सम्पूर्ण समाज का नुकसान वही मेरा नुकसान; इतनी एकात्मता समाज के साथ हो और इस तरह से जो समाज के साथ एकात्मता के संस्कार ग्रहण किये हुये लोग हैं ऐसे सभी लोगों का अनुशासन-बद्ध समूह, खड़ा हो यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रयास है। हृदय पर समाज-समर्पण का गहरा संस्कार हो इस दृष्टि से कार्य पद्धति, इस दृष्टि से सारा काम चल रहा है। अब आज ऐसा है कि इसका महत्व लोग नहीं समझ पा रहे हैं।

भौतिकता बनाम आत्मिकता

क्यों नहीं समझ पा रहे हैं? क्योंकि एक जो नई पश्चिम की ओर से आने वाली विचार-परंपरा है उस परम्परा में इसका महत्व नहीं माना गया है। एक-एक व्यक्ति को हम संस्कारित करेंगे, इस तरह के संस्कारित व्यक्तियों का संगठन खड़ा करेंगे, तो फिर जो परिवर्त्तन हम चाहते हैं विभिन्न क्षेत्रों में वह परिवर्त्तन आ सकता है. वह स्थायी हो सकता है, विकृत न होते हुए स्थायी हो सकता है, यह बात लोग नहीं समझ रहे हैं, क्योंकि पश्चिमी विचारों का प्रभाव है। यह पश्चिमी विचार कौन-सा है? बहुत दिन तक पिछली शताब्दि में पश्चिम में चर्चा चली। प्रारम्भ में यह चर्चा बौद्धिक स्तर पर academic level पर थी। Matter प्रधान है कि Mind प्रधान है? मौलिक बात कौन-सी है? Basic बात कौन-सी है? Mind, Matter को govern करता है या matter, mind को? तो बड़ी चर्चा चली, विद्वानों में चर्चा चली। इतनी लम्बी चर्चा चली कि लोग ऊब गये। और उस समय चेस्टरटन का एक पैराडॉक्स भी है। उन्होंने कहा कि भई! काहे के लिए चर्चा ज्यादा बढ़ा रहे हो, What is mind does not matter, what is matter do not mind. परन्तु यह जो चर्चा पहले बौद्धिक स्तर पर थी, धीरे-धीरे समाजशास्त्र में उसका application होने लगा और कुछ विचारकों में जिनमें कार्लमार्क्स सर्वश्रेष्ठ है, ऐसा विचार निर्माण हुआ कि matter ही सर्वप्रधान है, उसके मुताबिक ही mind बनता है। बाह्य

परिस्थिति या objective condition ही प्रधान है, और जैसी बाह्य परिस्थिति होगी, वैसा व्यक्ति का मन बनता है। बाह्य परिस्थिति में परिवर्त्तन हुआ तो व्यक्ति के मन में परिवर्त्तन होगा, व्यक्ति का मन कोई अलग स्वयम्भू इस तरह की इकाई नहीं है। तो बाह्य परिस्थिति के परिणाम-स्वरुप व्यक्ति का मन बनता है, मन के कारण परिस्थिति पर असर नहीं होता, परिस्थिति के कारण मन पर असर होता है। तो मौलिक बात कौन-सी है—बाह्य परिस्थिति, समाज की स्थिति, उसके परिणामस्वरूप व्यक्ति-व्यक्ति का मन बनेगा। माने मनुष्य परिस्थिति को बदल सकता है, यह बात नहीं, परिस्थिति मनुष्य को बदल सकती है। परिस्थिति में परिवर्त्तन आया तो मनुष्य के मन में परिवर्त्तन आयगा, मनुष्य के मन में परिवर्त्तन आने के कारण परिस्थिति में परिवर्त्तन आयेगा ऐसा नहीं हो सकता, यह निश्चित विचार कार्लमार्क्स ने लोगों के सामने रखा। और लोगों को जानकारी हो, न हो, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, conciously unconciously यह विचारधारा उधर से आयी। कार्लमार्क्स को न मानने वाले हिन्दू लोगों पर भी और मार्क्स का विरोध करनेवाले हिन्दू लोगों पर भी इस विचारधारा का प्रभाव हुआ। और इसके कारण सबके मन में यह विचार आया कि यदि हम परिवर्त्तन चाहते हैं तो बाह्य परिस्थिति में पहले परिवर्त्तन किया जाय। हमारे समाज में क्या परिवर्त्तन हो सकता है : रचना में, शासकीय सत्ता में, कानून में क्या परिवर्त्तन हो सकता है, यह सारा किया जाय। और इस तरह का सत्ता में यदि परिवर्त्तन होगा, कानून में परिवर्त्तन होगा तो उसके फलस्वरूप समाज की रचना में परिवर्त्तन होगा तो स्वाभाविक परिणाम के रूप में व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में जो परिवर्त्तन हम आवश्यक समझते हैं वह स्वाभाविक रुप से होगा, इसके आनुषंगिक फल के रुप में और व्यक्ति के मन में परिवर्त्तन होगा, उसके लिये अलग प्रयास करने की आवश्यकता नहीं, यह विचार conciously unconciously, समझते हुए, न समझते हुए, मार्क्स के माननेवाले, न मानने वाले हमारे पश्चिमी विद्याभूषित विद्वान लोगों के मन में आने लगा। इस ढंग से फिर कार्यवाही शुरू हुई, संस्थाएँ शुरू हुई, उपकरण शुरू हुए। और इसलिए जब रा ट्रीय स्वयंसेवक संघ ऐसा कहता है कि हम प्रारंभ व्यक्ति के हृदय से करेंगे, व्यक्ति के मन और आत्मा से करेंगे, हम परिवर्त्तन, उचित

अनुकूल आवश्यक परिवर्त्तन, इष्ट परिवर्त्तन, वांछनीय परिवर्त्तन,एक-एक व्यक्ति के हृदय में लायेंगे, इस तरह का जो परिवर्त्तित व्यक्ति है, ऐसे सभी परिवर्त्तित व्यक्तियों का हम संगठन खड़ा करेंगे और उसके कारण उसके स्वाभाविक परिणामस्वरूप बाह्य परिस्थितियों में हम परिवर्त्तन देख सकेंगे यह हमारा विश्वास है, तो लोगों को लगता है कि यह तो लम्बी प्रक्रिया है। और पता नहीं व्यक्ति के हृदय पर संस्कार करने से ही सारा काम होता है, नहीं होता, पता नहीं एक तरफ यह विचार भी लोगों के मन में आया। लेकिन हम यह देखें कि हिन्दू विचार है कि क्रिया-प्रतिक्रिया, action-reaction, दोनों एक दूसरे पर हैं। परिस्थिति का मन पर परिणाम, मन का परिस्थिति पर परिणाम दोनों होते हैं, लेकिन मनुष्य की जो इच्छाशक्ति है उसके फलस्वरूप मनुष्य विपरीत प्रतिकूल परिस्थिति को भी बदल सकता है। मनुष्य की इच्छा शक्ति मनुष्य का मन, स्वयम् शक्ति है, यह जो हिन्दू विचार है, यह न जानने के कारण पश्चिमी विचारों की रोशनी में लोग संघ को समझ नहीं पा रहे हैं।

कम्यूनिस्ट क्रांति : भौतिकता का शवगृह

लेकिन हम दूसरा पक्ष देखें। जिन्होंने यह प्रोग्रेसिव विचार रखा है उनको कहाँ तक सफलता प्राप्त हुई? बाह्य परिस्थिति में परिवर्तन होने से केवल शासकीय सत्ता में परिवर्त्तन होने से, कानून में परिवर्त्तन होने से क्या व्यक्ति के हृदय में परिवर्त्तन हो सकता है? सचाई यह है कि जबतक व्यक्ति के हृदय में परिवर्त्तन नहीं हो तबतक कोई भी व्यवस्था लादें या थोपें, वह चलनेवाली नहीं। तो पश्चिम का अनुभव कुछ अच्छा नहीं है, कम्यूनिस्टों का अनुभव अच्छा नहीं। रुस में पहली कम्यूनिस्ट राज्य क्रान्ति हुई। वहाँ के समाज के बारे में कई लोगों ने कहा है। कोई विस्तृत विवरण देने की आवश्यकता नहीं। विशेष रुप से चेकोस्लोवाकिया के, जो एक दूसरा कम्यूनिस्ट देश है, भूतपूर्व उपप्रधानमंत्री ने मिलोवन जिलास ने अपना verdict दिया है, अपना विस्तर अभिप्राय दिया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह कहा कि रूस में कम्यूनिस्ट क्रान्ति हुई यह बात सही है, उस क्रान्ति के फलस्वरूप समाज-रचना में परिवर्तन हुआ यह भी बात सही है; किन्तु रशियन मनुष्य जो है इस मनुष्य के मन में कोई परिवर्तन—मौलिक परिवर्त्तन नहीं

हो सका है इस क्रान्ति के कारण। जिन बुराइयों को दूर करने की प्रतिज्ञा लेकर कम्यूनिस्ट क्रान्ति हुई थी, वे बुराइयाँ दूर नहीं हो सकीं और इसके फलस्वरूप आज हम वहाँ ऐसा देखते हैं कि वर्ग समाप्त करने के नाम पर पुराने वर्ग की कब्रपर नये वर्ग निर्मित हुए, विषमता समाप्त करने के नामपर नई विषमताएँ पनपीं। एक ही समय मौलिक दृष्टि से मनुष्य के हृदय मे कुछ परिवर्तन नहीं हुए इसके कारण नये रूप धारण करते हुए पुरानी बुराइयाँ उसी प्रकार से वहाँ दिखाई देती हैं यह बात श्री जिलास ने कही। यह तो केवल नाम लिया है, ऐसे कई इसके और अखबारों में आपको दिखाई देगा कि कई लोगों ने इसका समर्थन किया है कि किस तरह मनुष्य के हृदय में वहाँ परिवर्तन नहीं हुआ, इसके कारण सारी बुराइयाँ वहाँ नये रूप में मौजूद हैं जिन्हें नष्ट करने की वहाँ प्रतिज्ञा की गई थी।

माओ : सतत क्रान्ति

सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी चीन को माना जाता है। और प्रारम्भिक अवस्था में चीन के उस समय के नेता माओ ने यह कहा भी था, यह जो मार्क्स का सिद्धान्त है कि बाह्य परिस्थिति के परिणाम स्वरूप मन बनता है इसे हम सिद्ध करेंगे। कम्यूनिस्ट क्रान्ति वहाँ हुई और कम्यूनिस्ट क्रान्ति के बाद समाज-रचना में जो परिवर्तन हुआ उस के कारण, उनका सिद्धान्त, यदि सही होता तो चीन के मनुष्य के मन में हृदय में परिवर्तन होता। पर माओ की यह अपेक्षा गलत सिद्ध हुई। सर्वसाधारण चीनी मनुष्य के मन में परिवर्तन होना तो दूर रहा, जो कम्यूनिस्ट हैं उनके भी हृदय में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ ऐसा उनको दिखाई दिया। और इतना ही नहीं, जिन्होंने क्रान्ति का नेतृत्व किया था उनके मन में भी, क्रांति के बाद हुये समाज परिवर्तन के कारण कोई मौलिक परिवर्तन हो सका, ऐसा नहीं दिखाई दिया। इसलिये माओ को दुख के साथ कहना पड़ा कि हमने क्रान्ति की है, समाज में परिवर्तन किया है लेकिन लोगों तथा नेताओं के मन में हम परिवर्त्तन नहीं ला सके। इसके कारण उनका कथन है कि हमारे अनुभव के आधार पर कल का क्रान्तिकारी आजका प्रतिक्रान्तिकारी बन जाता है। कल क्रान्ति की बात करनेवाला नेता जैसा ही शासन में आता है

धीरे-धीरे शासन में उसका निहित स्वार्थ खड़ा होने लगता है। फिर यदि क्रान्ति का रथ आगे बढ़ता है तो आज का निहित स्वार्थ क्रान्ति के रथ को आगे नहीं बढ़ने देना चाहता, यथास्थिति सर्वत्र रहनी चाहिए ऐसा प्रयास करने लगता है। और इसके कारण कल के क्रान्ति के नेता आज क्रान्ति का विरोध करनेवाले सिद्ध होते हैं, रूकावट डालने वाले सिद्ध होते हैं। यह अपना अनुभव माओ ने लिखा। उन्होंने फिर कहा कि इसलिये आवश्यक है कि एक बार क्रान्ति करने से नहीं होगा। एक बार के निहित स्वार्थ को नष्ट करने के लिए क्रान्ति करो, क्रान्ति के पश्चात् जो क्रान्तिकारी नेता बन जाते हैं वे भी बिगड़ जाते हैं, प्रति- क्रान्तिकारी बन जाते हैं, निहित स्वार्थी बन जाते हैं, फिर उनको नष्ट करने के लिए दूसरी क्रान्ति करो, ये क्रान्तिकारी नेता फिर से सत्ताधारी बनने के बाद निहित स्वार्थी बन जायेंगे इनको नष्ट करने के लिए फिर से क्रान्ति करो। तो सतत क्रान्ति का सिद्धान्त continuous revolution का सिद्धान्त क्या बताता है? कार्ल मार्क्स ने जो कहा था कि बाह्य परिस्थिति के परिणाम स्वरूप मन बनता है यह बात गलत है यह सिद्ध करनेवाला इससे बड़ा सबूत कोई आवश्यक नहीं। माओ की यह theory, माओ का यह सिद्धान्त continuous revolution का सतत क्रान्ति का, इस बात को सिद्ध करता है कि बाह्य परिस्थिति के परिवर्तन होने के कारण तदनुकूल परिवर्तन मनुष्य के मन में होगा इसका निश्चय इसकी guarantee नहीं हो सकती। इसके लिये स्वतंत्र प्रयास की आवश्यकता है, इस दृष्टि से कम्युनिज्म का जो एक मौलिक सिद्धान्त था वह गलत है, यह माओ के continuous revolution के सिद्धान्त से सिद्ध होता है।

हिन्दू समाज-जीवन

हिन्दुओं का प्राचीन परम्परागत विचार हमेशा अलग रहा है। हमने यह सोचा कि यह बात ठीक है कि परिस्थिति का मन पर, मन का परि-स्थिति पर, पर, दोनों का एक दूसरे पर क्रिया और प्रतिक्रिया के रूप में परिणाम होता है तो भी मनुष्य की इच्छाशक्ति ही प्रधान है। यह मनुष्य की विशेषता है। इस इच्छाशक्ति के भरोसे व्यक्तिगत जीवन में वह

नर से नारायण बन सकता है। तो इस इच्छाशक्ति को जाग्रत करते हुये मनुष्य के मन को, मनुष्य के हृदय को यदि हम सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्म हृदय का संस्कार देते हैं तो बाकी सारे भेद नष्ट हो जायेंगे। और नया समाज खड़ा होगा ? आमूलाग्र परिवर्त्तन का आधार सत्ता नहीं, कानून नहीं, बाह्य मनुष्य के हृदय में आमूलाग्र परिवर्त्तन, उचित परिवर्त्तन, वांछनीय परिवर्तन नहीं, ही हो सकता है यह जो हिन्दू विचार है उसके अनुसार जो यहाँ प्रतिदिन एकत्रित होते हुए सामूहिक कार्यक्रम करते हुए सामूहिक कार्यक्रमों के माध्यम से सामूहिकता का संस्कार होता है, समष्टिगत कार्यक्रम के माध्यम से समष्टि का संस्कार होता है, इस मनोविज्ञान के सिद्धान्त के आधार पर जो दिन-प्रति-दिन आमूलाग्र परिवर्त्तन व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में करने का यह प्रयास चल रहा है, वह प्रयास अधिक सफल होने वाला है, स्थायी परिणाम देनेवाला है इस बात को हमें ध्यान में रखना चाहिए। केवल दोनों अलग-अलग विचारधाराएँ हैं इतना ही कहने से नहीं होगा। गलत साधनों का परिणाम गलत निकलता है। जब मनुष्य यह समझने लगता है कि बाह्य परिस्थिति के कारण मनुष्य के मन पर असर होगा, मनुष्य का मन बदल जायगा और बाह्य परिस्थिति का मतलब आज होता है विशेष रूप से सत्ता और कानून तो हमारे सारे चिन्तन में गड़बड़ी आ जाती है, विचार में गड़बड़ी आ जाती है, और फिर हम सोचने लगते हैं परिवर्त्तन कहिए, क्रान्ति कहिए, महाक्रान्ति कहिए, और कुछ कहिए वह सत्ता के माध्यम से आयेगा। इसमें सब कुछ सर्वप्रधान बात होगी वह सत्ता है, Through power everything यह विचार आने लगता है। फिर सारा ध्यान केन्द्रित होता है सत्ता हथियाने पर, सत्ता प्राप्ति करने पर, जिससे जीवन मूल्यों में परिवर्त्तन होता है, Status Symbols प्रतिष्ठा के प्रतीकों में परिवर्त्तन हो जाता है। और इसका परिणान क्या होता है ? दुनिया का इतिहास हमें बनाता है।

इतिहास के खंडहर : सत्ताभिमुख समान-जीवन के खंडहर

जब व्यक्ति के हृदय को महत्त्व न देते हुए और यह जो सत्ता और कानून और बाह्य बातों को महत्त्व दिया जायगा तब इसका परिणाम क्या होता है

दुनिया का इतिहास हमें बताता है। इतिहास शास्त्रज्ञोंने अलग-अलग राष्ट्रों का जब अध्ययन किया तो हिन्दुओं के बारे में उनको एक बात का बड़ा आश्चर्य हुआ। हिन्दुओं का राष्ट्र रूप में कब निर्माण हुआ इतिहास को पता नहीं। ईतिहास ने भूतकाल में जब आँखे खोली तो हमें राष्ट्र रूप में ही देखा। किन्तु बाकी राष्ट्र तो बाद में पैदा हुए।

जो बाद में पैदा हुए, विकसित हुए, प्रबल हुए, उन्होंने राज्य-साम्राज्य अपने चलाए, भौतिक दृष्टि से महान प्रगति की। एक इतिहास की पद्धति है कि किसी कालखंड में जो कोई राष्ट्र भौतिक प्रगति में सब से अग्रसर होगा उस राष्ट्र का नाम उस कालखंड की सभ्यता को दिया जाता है। इस नियम के अनुसार उनके राष्ट्र का नाम उस-उस कालखंड की सभ्यता को भी प्राप्त हुआ, सारे भौतिक क्षेत्र में दुनिया का उन्होंने नेतृत्व भी किया, और इतना, सारा होने के बाद नष्ट हो गए। लेकिन हिन्दू-राष्ट्र कब निर्मित हुआ पता नहीं, इसलिये उसको अनादि कहा जा सकता है इस अर्थ में कि आदि का पता नहीं है। और इसके अन्दर कितने भले बुरे दिन आये, अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियाँ आयी, परायों के आक्रमण हुए, परायों ने यहाँ शासन चलाया, इतना सारा होते हुए भी यह समाज चल रहा है, यह राष्ट्र चल रहा है, यह नष्ट नहीं हुआ। आज वह बैबिलोनिया कहाँ है ? वह खाल्डिया कहाँ है ? असीरिया कहाँ है ? वह साक्रेटिस का ग्रीस कहाँ है ? आज का ग्रीस साक्रेटीस के ग्रीस का उत्तराधिकारी नहीं। वह जूलियस सीजर का रोम कहाँ है ? क्योंकि आज का इटली ज्यूलियस सीजर के रोम का उत्तराधिकारी नहीं ? खेट राजाओं का मिश्र कहाँ है ? क्योंकि आज का मिश्र खेट राजाओं के मिश्र का उत्तराधिकारी नहीं ? और जरथ्रुष्ट का पर्शिया कहाँ हैं, क्योंकि आज का पर्शिया जरथ्रुष्ट के पर्शिया का उत्तराधिकारी नहीं। ये सारे राष्ट्र कहाँ हैं, जिन्होंने और हिन्दुस्थान के बाहर संपूर्ण दुनिया का, उस समय के ज्ञात जगत् का नेतृत्व किया था भौतिक क्षेत्र में ? ये सारे राष्ट्र कहाँ हैं ? ये नष्ट हो गये। हमारा राष्ट्र चल रहा है। इतिहासज्ञों ने खोज की, इसका कारण क्या होगा ? तो उनको ऐसा ध्यान में आया कि यह जो नष्ट हुए राष्ट्र हैं इनमें से हर एक राष्ट्र के समाज जीवन के अन्तिम चरण में, याने नष्ट होने के कुछ साल पहले, एक प्रक्रिया, एक Phenomena

दीखती थी, वह प्रक्रिया हिंदुओं के बारे में अबतक नहीं दिखाई दी। और वह प्रक्रिया क्या थी? तो उन्होंने यह देखा इनमें से हरएक राष्ट्र के विषय में यह हुआ, खाल्डिया बेबिलोनिया, असीरिया, पर्शिया, ग्रीस, रोम, इजिप्त, सबके बारे में कि जब ये राष्ट्र नष्ट हुए उसके कुछ साल पहले यह बात थी कि उस-उस राष्ट्र का समाज-जीवन यह शासनाभिमुख बना, शासनावलम्बी बना, शासन केन्द्रित बना, मानो समाज-जीवन का केन्द्र शासन या सरकार बनी, यह परिस्थिति निर्माण हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि बाह्य आक्रमण अथवा अंतर्निहित विघटन के फलस्वरूप, कारण चाहे जो हो जैसे ही सरकार टूटती है, शासन टूट जाता है वैसे ही जैसे कोई पेड़ खड़ा हो, पेड़ के सहारे बेल ऊपर चढ़ती हो और हाथी आकर पेड़ को टक्कर मारता है, पेड़ गिर जाता है, जैसे पेड़ गिर जाता है, पेड़ के सहारे ऊपर चढ़नेवाली बेल भी पेड़ के साथ गिर जाती है, इनमें से हरएक राष्ट्र भर-भराकर पस्त हो गया।

हिन्दू समाज जीवन : आनन्त्य का बीज

हिन्दुओं के बारे में उन्होंने कहा कि यहाँ की विशेष रचना रही। यहाँ का समाज जीवन कभी शासनाभिमुख, शासनावलम्बी, शासनकेन्द्रित नहीं रहा। यहाँ का समाज स्वायत्त रहा, स्वयं शासित रहा है। यहाँ शासकीय सत्ता रही उसका सीमित महत्व रहा है। संपूर्ण जीवन को ग्रस्त करने वाली शासकीय सत्ता यहाँ कभी नहीं रही। और समाज जीवन भी शासनावम्बी और शासन केन्द्रित कभी नहीं रहा। जब हिन्दुओं का शासन था उस समय शासन समाज केन्द्रित था, शासन समाजावलम्बी था। परायों के समय में यह अवस्था नहीं रही होगी, किन्तु संपूर्ण इतिहास में हम देख सकते हैं कि समाज का जीवन अनादि काल से आजतक स्वयंशासित रहा है। इसके कारण शासन आता भी है, जाता भी है, समाज जीवन पर इसका असर नहीं हुआ यहाँ कितने ही शासन आये, हिन्दुओं के आये, अहिन्दुओं के आये। कोई नया शासन आया हमने उसका स्वागत किया, गया उसको टा टा कर दिया। कितने ही शासन आये कितने ही गये। लेकिन यह हिन्दु राष्ट्र अखण्ड चलता रहा। टेनिसन 'द ब्रुक' कविता में उसका निर्झर करता है कि Men may come and men may go but I go on for ever. तो निर्झर कहता है

कि मेरे किनारे कई लोग आते हैं कई लोग जाते हैं, लोग तो आते-जाते रहते हैं, लेकिन मैं अखण्ड बहता रहता हूँ, इसी तरह से मानो हमारा यह हिन्दू राष्ट्र गर्वपूर्वक कह सकता है कि Government may come and Govenment may go but the Hindu Nation goes on for ever.

हमारा लक्ष्य

हमारे हिन्दू राष्ट्र का मूल ही है स्वयंशासित आत्माभिमुख समाज जीवन। हम कभी शासनाभिमुख, शासनावलम्बी या शासन केन्द्रित नहीं रहे। सत्ताभिमुख होकर पुराचीन सभ्यताएँ नष्ट होती रही हैं, आत्माभिमुख रहकर हमारी सभ्यता-संस्कृति अनादि-अनंत बनी है। तो आवश्यकता यह है कि वर्त्तमान भौतिकता मुखी और कुछ हद तक सत्तोन्मुख समाज जीवन को आत्माभिमुख मनस्वी बनाया जाय। हिन्दू राष्ट्र के पुनर्निमाण की यही हमारी कल्पना है। हमारा समाज-जीवन स्वयम्भू, स्वयं अपने सामर्थ्य से जब स्वायता, स्वयं-शासित, सुसंगठित खड़ा होगा तभी यह चिरन्तनत्व हमारा टिक सकता है। और इस दृष्टि से यदि व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय को संस्कारित किया गया तो व्यक्ति समाज समर्पित हो समाज से एकात्म हुआ, संपूर्ण समाज के सुख-दुःख के साथ उसका एकात्म होगा। ऐसे व्यक्तियों का अनुशासनबद्ध संगठन खड़ा किया गया तो वह समाज, सुसंगठित समाज, विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली सभी समस्याओं का स्वाभाविक रूप से मुकाबला करने में समर्थ होगा। यह विचारधारा लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यह प्रयास चल रहा है। पश्चिम की ओर से उधार लाई हुई जो विचार पद्धतियाँ हैं उनसे हमारा basic बुनियादी मतभेद है, मौलिक मतभेद है और वास्तब में भारत में हमारी मिट्टी से उपजी विचारधारा चाहिए थी पश्चिम से उधार ली गई विचारधारा इसका विचार संबुद्ध लोगों को, बुद्धिमान लोगों को करना चाहिए यह हमारी प्रार्थना है। यह जो मौलिकता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य की है उसे, और हिन्दू कल्पना को हिन्दू कनोटेशन के साथ समझना चाहिए यह बात ध्यान में रखते हुये आज के इस अवसर पर हम अपने वर्तमान के भविष्य का, अपनी परम्पराओं के संदर्भ में विचार करने का निश्चय करें, तो हम ठीक ढंग से विचार कर सकेंगे तथा आगे का रास्ता हम ठीक ढंग से निश्चित कर सकेंगे, इतना ही इस समय कहना पर्याप्त होगा ऐसा मैं समझता हूँ।●